भारत के दक्षिण-पश्चिम तट में 1926-2005 के दौरान तारली और बंगाड़ मालिकियों में हुए उत्तर-चढ़ाव पर पर्यावरणीय प्रभाव का प्रभाव

आपूर्ति

भारत के दक्षिण-पश्चिम तट विश्व के प्रमुख उत्पादन क्षेत्र है (मलबार उत्पादन), जो भारत के कुल समुद्री मछली पक्ष में लगभग 30-50% का योगदान करता है। तटीय उत्पादन परिस्थितियों के तंत्र छोटे छोटे पर्यावरण के लकड़ीकारी उत्पादन की मशीनों, जैसे ऐंटी, तारली और बंगाड़ का आयाम गह है और उनकी प्रभाविता में कहरनवाद अंतर-वाणिज्य उत्तर-चढ़ाव भी देखा जाता है। मलबार उत्पादन क्षेत्र की समुद्री मालिकियों का यह विवेश है कि दक्षिण-पश्चिम विश्व को बुद्धि तटीय वेलापत्तरी मालिकियों को कामयाब रखने वाली तारली और बंगाड़ (सॉफ्ट्लिफर कानागुटा) को प्रभावित कर रही है। मलबार उत्पादनों तरीकों में इनका विवेश का स्थान है जहाँ इनका वाणिज्य विवेश होता है, विवाह वहौ मस्तमली, मस्तमली मशीनों, समुद्री मछली और स्वास्थ्य जैसे कई परम्पराओं के लिए यह आहार भी है। इस तट पर इन दोनों जातियों के विवाह विवेश का तुलना विवेश के अन्य प्रमुख उत्पादनों के तंत्र में तारली की एक जाति और ऐंटी की एक जाति के बीच देखी जा रही है। तारली और बंगाड़ (सागरी वायुआंडं) कांटा का एक सहायक विश्लेषण मालिकियों में बदल पेश करने के उत्तर-चढ़ाव पर पर्यावरणीय प्रभाव का प्रभाव जानने के लिए उपयोगी होगा।

लेखक

पी.के. कुश्कुमार, के.एस. मोहम्मद, पी.के. असोकन, टी.बी. सत्यनाथ, पी.पी. ज्ञकरिया, पी.पी. अब्दुरहमान, बंगाड़ शोट्ट्समगर और आर. एम. दुभाकर

काल-श्रेणी ऑक्कड़

भारत के दक्षिण-पश्चिम तट से वर्ष 1926 से 2005 तक की अवधि में तारली और बंगाड़ पक्ष की सांख्यिकीय शक्तिकी पहले के मध्यस्थ प्रस्तुतियों के परिणामों और सी एम एफ आर आर द्वारा संग्रहित किया गया। यू.एन.डी पी/एफ ए ओ बंगाड़ मालिकियों पर इस संस्करण को समायोजन और डिप्रेशन पर निर्भरता संबंधी सूचनाओं का समावेश किया गया। केंद्र और तटीय कार्यालय वाणिज्य विभाग, एलिनो रिपोर्ट (1926-2005) का इस आधार के लिए उपयोग किया गया। भारत के दक्षिण-पश्चिम तट में उत्पादन मार्च-अप्रैल और जून-अगस्त के दौरान रिपोर्ट की जाती है। तटीय उत्पादन मौसम के दौरान भारत के दक्षिण-पश्चिम तट के समुद्री अभियान जलक्रान्त का उपरोक्त तापमान बढ़ता है। इस अवधि की आशय की तटीय उत्पादन तीर्थंकरा (कोल्वल अपवेलिंग स्टोर्स) कोश अधिशिषन दाटा एससी मिट्टी एस एच टी दाटा के अध्याय पर परिवर्तन रूप से परिवर्तित किया गया। यह संबंध विश्लेषण के प्रमाण करने के फ़क्त दाटा को पर्यावरणीय दाटा से जोड़ दिया गया। इस संबंधों का निर्धारण करने के लिए मछली पक्ष, वृक्ष, एलिनो रिपोर्ट और अधिशिषन और तटीय उत्पादन तीर्थंकरा की असंगतियों के 6 - प्राकृतिक गतिविधियों का भी आलोचना किया गया।

मालिकियों प्रबन्धात्मक

बंगाड़ की पक्ष 1926 से 1956 तक के प्रमाण 31 वर्षों में तारली पक्ष के आगे उम्मीदें (चित्र-1)। वर्ष 1957 से 1992 तक के 36 वर्षों के लिए अन्य जातियों के आगे
मात्रवंशिक 2011-12, अंक 10

चित्र, 1. भारत में 1926-2005 के दौरान दंशिक-पश्चिम तट से तालली और बींगडा पकड प्रकरण दिखाने के लिए अधिक मात्राओं से साझा मान तारली की पकड़ उच्च थी। इसके बाद 1993 से 1998 तक की 6 वर्षों की अवधि में बींगडा पकड़ तारली के आगे फिर से उच्च हो गयी। यह प्रकरण 1999-2005 की अवधि में प्रतिवर्ष गयी और हाल के सात सालों में तालली फिर से प्रमुख हो गयी।

तालली और बींगडे के अवरूप प्रतिमान को तुलना सारणी-1 में दी गयी है। 1940 के प्रारंभिक वर्षों में तालली मात्रविकी समय का घट गयी और विशेष सरकार ने 5 वर्षों (1943-47) के लिए औपचारिक रूप से भी मात्रविकी बंध किया।
पेट्रोल 75 वर्षों के 48% तक की अवधि में तालली की पकड़ उच्च और पेट्रोल 24% तक की अवधि में बींगडे की पकड़ कम थी। इस दौरान 15% तक की अवधि में दोनों जातियों का पकड़ कम थी और 3% तक की अवधि में दोनों की पकड़ उच्च थी। शेष 10% की अवधि में दोनों जातियों का पकड़ प्रकरण में एक सप्त पेट्रों नहीं देखा गया था।

सारणी: तालली की पकड़ के संरक्षामय उत्तराय - पश्चिम तट की तुलना में 1926-2005। (चित्र-1). लेकिन बींगडे की पकड़ में केवल छोटा सा उत्तर - चढ़ाव हो देखा गया था और इसकी पकड़ हमेशा 50,000 टन के आसपास हो रही थी।

80 वर्षों के साधारणप्र विस्तारण ने तालली और बींगडे के बीच विवाहध्वस्त नकारात्मक सहसंबंध निहित था। (सारणी-2)। पहले किसे जब अभ्यासों में यह स्पष्ट किया है कि तालली और बींगडे का संबंध प्रतिवर्ष गयी है और इसकी प्रेमता में एक चक्रीय पेट्रों (10 वर्षो के चक) है। फिर भी, संरक्षामय

<table>
<thead>
<tr>
<th>सारणी - 1</th>
<th>फिरले 80 वर्षों के लिए (1926-2005) भारत के दंशिक - पश्चिम तट में तालली और भारतीय बींगडे के पकड प्रकरण को तुलना</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>तालली और बींगडे पकड़</td>
<td>वर्ष</td>
</tr>
<tr>
<td>तालली उच्च बींगडा कम</td>
<td>1934, 1957, 1960</td>
</tr>
<tr>
<td>तालली उच्च बींगडा कम</td>
<td>1926, 1928-30, 1932-33</td>
</tr>
<tr>
<td>तालली उच्च बींगडा कम</td>
<td>1936, 1940, 1942, 1948-52, 1993-96</td>
</tr>
<tr>
<td>तालली उच्च बींगडा कम</td>
<td>1927, 1931, 1935</td>
</tr>
<tr>
<td>तालली उच्च बींगडा कम</td>
<td>1989-90, 1941, 1953, 1958</td>
</tr>
<tr>
<td>तालली मल्लक रंग</td>
<td>1943-47</td>
</tr>
</tbody>
</table>
विश्लेषण ने इस प्रकार के प्रतिवर्षी वंशवंश या इस तरह के अस्तित्व को खारिज कर दिया। भारत के पश्चिम-पश्चिम तट में इन दोनों जातियों का विविधता एक ही प्रकार के संसारों से किया गया था।
80 वर्षों के आंकड़ा विश्लेषण के बाद यह कहा जा सकता है कि ताली या बोंगड़ा मात्र उन वर्षों अवलोकन नहीं हो सकता। यदि भारत के परम्परागत तट से ताली की पकड़ में दशकों तक अवलोकन में घटित हुआ है तो अन्य प्रमुख जातियों (बोंगड़ा) को पकड़ भी इससे प्रभावित होना चाहिए। वस्तुतः दोनों जातियों का पकड़ इस अवधि के 15% समय तक ही इन्तना कम रही थी और वर्ष 1986 के अवकाश, इस प्रकार को घटनाएं केवल वर्ष 1959 के पहले अवलोकन-पश्चिम तट में यथोर अकेला कोष संपाषण और वाल्य संपाषण समय के प्रस्तुति के पहले ही हुई थी। अतः ताली या बोंगड़ा का पकड़ में उत्तर-चढ़ अवलोकन नहीं बल्कि कुछ मात्र वर्ष उधार एवं विज्ञान विभाग वर्षों में हुआ है (सारणी-1)।

पद्यावृत्ती प्राचीन वर्षों

ताली और बोंगड़ा की पकड़ एवं पद्यावृत्ती प्राचीन वर्षों के बीच का सहसंबंध सारणी-2 में दिखा गया है। पहले के कार्यक्रमों को रिपोर्ट के रचना वारिश ने ई एन एस के साथ नकारात्मक सहसंबंध दिखाया। ताली नकारात्मक की सी यू एस के साथ विश्लेषण नकारात्मक सहसंबंध दिखाया जो पहले करता है कि तीत्र उपवर्ष इसकी सफल मात्रकी केंद्रित जलुकात नहीं। फिर

<table>
<thead>
<tr>
<th>सारणी - 2 अवधि के पकड़ और पद्यावृत्ती प्राचीन वर्षों के बीच परिशोधन सहसंबंध</th>
<th>सुहः कर्णक</th>
<th>वारिश</th>
<th>ई एन एस ओ</th>
<th>घाणी</th>
<th>अग्रंस</th>
<th>ताली</th>
<th>बोंगड़ा</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>सी सी यू</td>
<td>सी सी यू</td>
<td>1</td>
<td>0.074</td>
<td>1</td>
<td>0.005</td>
<td>-0.317**</td>
<td>1</td>
</tr>
<tr>
<td>यू सी यू</td>
<td>-0.069</td>
<td>0.033</td>
<td>-0.102</td>
<td>1</td>
<td>0.116</td>
<td>0.129</td>
<td>0.089</td>
</tr>
<tr>
<td>ताली</td>
<td>0.185</td>
<td>-0.088</td>
<td>0.047</td>
<td>-0.269*</td>
<td>-0.323**</td>
<td>1</td>
<td>0.02</td>
</tr>
</tbody>
</table>

** तीत्र प्रभावित संख्या की और * महत्वपूर्ण संख्या की सूचना से है।

विन्यास कर सारणी-2 के कारण अवलोकन की सारणी-2 (5)। वारिश, सुहः कर्णक का ई एन एस के साथ विश्लेषण अवलोकन की सारणी-2 (5)। वारिश, सुहः कर्णक का प्रदर्शन वर्ष वर्ष से 1926-1956 (ए) और 1993-1998 (सी) के दौरान।

विवरण -2 भारत के पश्चिम तट पर 1926-2005 के दौरान के ताली अवलोकन और भारतीय बोंगड़ा अवलोकन की अवसंगतियों के अनुसार सी यू एस अवसंगतियों के बाद किए गए परामर्श मात्र और वारिश। बोंगड़ा की प्रमुखता की अवधि - 1926-2005, (सी) ताली की प्रमुखता की अवधि - 1957-1992, (सी) बोंगड़ा की प्रमुखता की अवधि - 1993-1998 और (डी) ताली की प्रमुखता की अवधि - 1999-2005
उत्तरायण केंद्र में कूलपिड मालिकाओं के सकल प्रेषण के लिए अंद्र और डिम्बकों को समुचित बायो स्थान प्रदान करने वाले अनुकूलतम पर्यावरणीय अवस्थाएँ या अनुकूलतम पर्यावरणीय गवाह जैसे पोषक संपुष्टीकरण (उद्ग्रह या मिठाण), सांद्रण प्रशिक्षा (अभिव्यक्ति, सतर) और ध्यान प्रशिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है। उद्ग्रह मौसम के दौरान के अनुकूल पर्यावरणीय स्थितियों डिम्बकों की अतिरिक्तता और मालिकाओं में प्रेषण को खतरा पहुँच जा सकती है। इसलिए उतत्त्ती जैसे कूलपिडों की मालिकाओं में प्रेषण को सफल, जिसका अंदजनन और प्रेषण केवल उद्ग्रह मौसम से परस्पर व्याप्त होता है, कई पर्यावरणीय प्राचलों, जैसे वात गति, विश्वृत समृद्धि स्थितियों, उद्ग्रह तीव्रता, समुक्षोपरितल तापमान और उद्ग्रहित जल के विश्लेषण आक्षेपन स्तर पर आश्रित रहती है। तौर-उद्ग्रह से अभित्रजय क्षेत्रों में विलीन आक्षेपण मान बहुत कम हो जाते तो अंदजनक अंदजनन के लिए तंत्रज्ञ क्षेत्र में नहीं आयो, और उच्च वात गति (55-6 मि./नच) या विश्वृत समृद्धि स्थितियाँ से डिम्बकों का नाश हो जा सकता है या उनके अंद तन हल दूर अपस्त्रीय क्षेत्रों में प्रवाहित किया जा सकता है। बीस्केड से भिन, तौर-उद्ग्रह उद्ग्रह क्षेत्र में ताली की सफलता जुन से सितंबर तक इस क्षेत्र में होनेवाली पर्यावरणीय स्थितियों पर आश्रित है।

<table>
<thead>
<tr>
<th>जैसिकों</th>
<th>तालाली</th>
<th>भारतीय बंगाल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>अंदजनन-मास</td>
<td>जून-अगस्त</td>
<td>मार्च-अगस्त (अक्टूबर तक विस्तृत)</td>
</tr>
<tr>
<td>अंदजनन तन</td>
<td>उत्तर अहमदाबादी जजस्त्रें</td>
<td>शेष क्षेत्र में 20-30 मि. गहराई के क्षेत्र</td>
</tr>
<tr>
<td>प्रयाग प्रदेश क्षेत्र में संचाली</td>
<td>15 से 30</td>
<td>18-19 से 30</td>
</tr>
<tr>
<td>जनसंख्या</td>
<td>30x10⁴-45x10⁴</td>
<td>90x10⁴-95x10⁴</td>
</tr>
<tr>
<td>डिम्बकों प्रमुख का मास</td>
<td>जून-अगस्त</td>
<td>अप्रैल-अक्टूबर</td>
</tr>
</tbody>
</table>

सारणी-3: भारत के पर्यावरण-परिस्थिति तट से ताली और भारतीय बीबेड के पुनर्लवण जैसिकों को तुलना
इसका अंडनन और मालिकियों में प्रवेश का समय बनाना होता है यह मार्च से अगस्त तक और कभी कभी अनुमूलक तक 
विस्तृत (सारणी-3) रहता है। बोंगड़े की पुनर्स्थापन रोगी ताराली 
से पूर्वताया भिज रहता है। इसलिए, तीव्र उत्प्रवाह से उत्पन 
पर्यावरणीय परिस्थितियों से बोंगड़े का अंडनन और मालिकियों 
की प्रवेश शायद प्रभावित नहीं होता क्योंकि उत्प्रवाह के प्रारंभ 
काल में घटित क्षति की पूंजी और चीजों को जा सकती है। 
लॉगहस्ट और ब्रूटर (1990) ने भी यह दिखाया कि भारत 
के दक्षिण-पश्चिम तट की ताराली मालिकियों उत्प्रवाह की तीव्रता 
पर (समूद्र स्तर से) अर्थात कालिया है। (Can. J. Fish. 
Aquat. Sci. 47: 2407-2419)

निष्कर्ष

बोंगड़े की तुलना में ताराली का अंतरालालिक उत्तर-पूर्व 
बहुत उच्च होता है। ताराली और बोंगड़े की फकड़ में विचारणीय 
प्रतिकृति संबंध नहीं देखा गया। दोनों जातियों की फकड़ का 
सुपर्व कलंक, ई एन एस ओ या बारिस था कोई संबंध नहीं 
था।

दोनों जातियों को एक ही क्षेत्र से एक ही संरचना के उपयोग 
करके विनियोज करते थे और यह भी प्रयो: एक ही संरचना पर, 
अत: 1940 के वर्षों के प्रारंभ में और वर्ष 1994 में ताराली 
मालिकियों की घटी अंतरितवर्तन का परिचालन नहीं हो सकता। 
मलावार तट में ताराली का अंडनन और मालिकियों में प्रवेश 
जून से सितंबर तक के प्रमुख उत्प्रवाह मौसम से परस्पर 
व्यावहारिक था, जब कि बोंगड़े का अंडनन और मालिकियों में 
प्रवेश को अर्थर कुछ बिस्तृत था। इसलिए कुछ वर्षों के दौरान 
तीव्र उत्प्रवाह से उत्पन्न प्रतिकृति पर्यावरणीय 
ताराली के सकल अंडनन और मालिकियों में प्रवेश को प्रतिकृति 
रूप से प्रभावित किया गया। 1950 के बाद के मध्यकाल और 1990 
के बाद के अंत में ताराली मालिकियों में देखा गया पुनर्स्थापन 
का संबंध भारी बदला से जोड़ दिया जा सकता है। 

यह कार्य एपी उपकर निर्देश परियोजना के अन्तर्गत “भारत 
के दक्षिण-पश्चिम तट के समुद्री मालिकियों संप्रदायों को जैव 
विविधता पर मालिकियों का प्रभाव” पर किया गया था।

<table>
<thead>
<tr>
<th>मुख्य शब्द/Keywords</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>तटीय, उत्प्रवाह, तीव्रता</td>
</tr>
<tr>
<td>ई एन एस ओ</td>
</tr>
<tr>
<td>सूचकादेश</td>
</tr>
<tr>
<td>इटाल विभाजित ग्रुप</td>
</tr>
</tbody>
</table>